Date
24/05/2021

(1)

डॉ० उमेश मल्लिक
इतिहास विभाग
Govt. Deg. College Jaleshwar(?)

अरबों की सिन्ध-विजय का राजनीतिक प्रभाव :-

प्रोफेसर ए० बी० एम० हबीबुल्ला ने अरबों द्वारा सिन्ध विजय के राजनीतिक परिणाम को गौण बतलाया है। भारत में इस्लाम को एक राजनीतिक शक्ति बनाना अरबों के भाग्य में नहीं था। सिन्ध की विजय का सांस्कृतिक अर्थ चाहे जो हो किन्तु राजनीतिक दृष्टि से उसका कुछ परिणाम नहीं हुआ। उसने भारतीय महाद्वीप के केवल एक सीमान्त का स्पर्श किया और उसने जो मन्द आवोद्दीपन किया था वह शीघ्र विस्मृत हो गया इस्लामी राष्ट्रमण्डल में अरबों का प्रभाव क्षीण होने लगा। भारत में उसके विस्तार में भूगोल बाधक था, दसवीं शताब्दी तक उसका विजय-कार्य समाप्त हो गया और भारतीय राजा उनको पहले की भाँति साहसी और अनुशासनीय,

व्यापारी मानने लगे। राजपूत राज्यों ने अरब आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए पूरी तैयारी कर ली। कन्नौज के शासक हरचन्द के साथ अरबों ने कोई युद्ध नहीं किया था। वस्तुतः अरबों की अपेक्षा तुर्की ने उत्तर भारतीय राज्यों को अवश्य ही दहला दिया था। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि भविष्य में तुर्की द्वारा भारत विजय के मार्ग को अरब वालों ने प्रशस्त कर दिया था।

राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से अरबों के आक्रमण का परिणाम भले ही निर्णायक न हो लेकिन इस्लामी संसार के साथ भारत को सम्बन्ध जोड़ने में अरब वालों ने बड़ी सहायता प्रदान किया। अरब सत्ता भारत में नष्ट हो गयी भारतीय भाषा, कला, रीति-रिवाज तथा जन-जीवन पर स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा। सिन्ध में जिस

(3)

व्यक्तियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था उनका सम्बन्ध ~~मुसलमान~~ मुसलमानों के साथ मध्ययुग के अन्त तक बना रहा और वे भारतीय राजनीति को प्रभावित करते रहे।